अमर उजाला
प्रवाह
महोत्सव विश्वास का
75
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948
नई दिल्ली ■ बृहस्पतिवार, 16 जून 2022

जहां भय समाप्त हो जाता है, वहीं से जीवन शुरू होता है।
-ओशो

5जी की उन्नत सेवाओं के परीक्षण के बाद सरकार ने इसकी नीलामी को स्वीकृति प्रदान कर यह स्पष्ट कर दिया है कि कि वह पांचवीं पीढ़ी की उस वायरलेस नेटवर्क टेक्नोलॉजी को देश में जल्दी शुरू करना चाहती है, जिससे तकनीक की हमारी दुनिया पूरी तरह बदल जाने वाली है।

एक कदम और

प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) द्वारा 5जी स्पेक्ट्रम की नीलामी को स्वीकृति प्रदान करने से जहां टेलीकॉम कंपनियों का इंतजार खत्म हो गया है, वहीं इस कदम से लोगों को भी दीपावली तक 5जी सेवाओं का तोहफा मिलने की उम्मीद है। इस उम्मीद की वजह यह है कि नीलामी की प्रक्रिया आगामी 26 जुलाई से शुरू होने वाली है। पिछले ही महीने आईआईटी, मद्रास में सफल परीक्षण के जरिये सरकार 5जी स्पेक्ट्रम की कॉलिंग और वीडियो कॉलिंग के साथ उन्नत सेवाओं को परख चुकी है। कुल पांच लाख करोड़ रुपये के मूल्य की 72,097.85 मेगा हट्र्ज स्पेक्ट्रम की नीलामी बीस साल के लिए होगी और सरकार अलग-अलग नौ फ्रीक्वेंसी बैंड्स में स्पेक्ट्रमों की नीलामी करेगी। टेलीकॉम कंपनियों को दस साल बाद स्पेक्ट्रम वापस करने का विकल्प भी दिया गया है। सबसे अच्छी बात यह है कि पहली बार सफल निविदाकर्ताओं को अग्रिम भुगतान नहीं करना पड़ेगा। इसके बजाय बीस साल में समान राशि की किस्त चुकाए जाने का प्रावधान है और सभी किस्तों का भुगतान साल की शुरुआत में अग्रिम राशि के तौर पर करना होगा। इस कदम से नकदी प्रवाह में कमी आने और इस क्षेत्र में व्यवसाय करने की लागत कम होने की उम्मीद है। यह तो पहले से ही कहा जा रहा है कि 5जी यानी पांचवीं पीढ़ी की वायरलेस नेटवर्क टेक्नोलॉजी हमारी तकनीकी दुनिया को पूरी तरह बदल देगी। 5जी में इंटरनेट की रफ्तार 4जी से 10 गुना अधिक होने की बात कही जा रही है, जिससे फिल्म अपलोड या डाउनलोड करने की गति बढ़ जाएगी, ऑनलाइन कामकाज और आसान हो जाएगा, वर्क फ्रॉम होम वर्क फ्रॉम एनीव्हेयर में बदल जाएगा, हाईब्रिड कार्यसंस्कृति का विस्तार होगा तथा सुरक्षा, गेमिंग, शिक्षा आदि के क्षेत्रों में भी आमूलचूल बदलाव दिखेंगे। केंद्रीय कैबिनेट ने प्राइवेट कैप्टिव नेटवर्क्स यानी निजी उपयोग के नेटवर्क विकसित करने को भी मंजूरी दी है, जिससे ऑटोमोबाइल,

स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा और अन्य क्षेत्रों में इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा। जाहिर है, पूरा देश तकनीक की दुनिया में होने वाले इस बदलाव का साक्षी बनने को आतुर है, भले ही इसका लाभ सरकार द्वारा पर्याप्त निवेश करने तथा उपभोक्ताओं द्वारा नए उपकरणों की खरीद के लिए खर्च करने पर ही क्यों न मिले।

स्वच्छ परिवहन की कीमत

बंगलूरू के अनुभव से देखा जा सकता है कि मेट्रो ट्रेन ने इस व्यस्त शहर में मध्य वर्ग का जीवन तो बदला ही है, लेकिन इसकी वजह से कुछ विसंगतियां भी पैदा हो रही हैं। निकट भविष्य में पचास और शहरों में मेट्रो ट्रेनें शुरू हो सकती हैं, वे बंगलूरू के अनुभव से सबक ले सकते हैं।

वर्ष 2008 में पहली मेट्रो लाइन की शुरुआत ने बंगलूरू को सतत बदलाव की स्थिति में ला दिया, जो कभी खत्म होता नहीं लगता है। हर लाइन जुड़ने के साथ जगहें और पहचान चिह्न गायब हो जाते हैं, तथा इसके चलते मलबे, कटे हुए पेड़ों के अवशेष एवं गड्ढे रह जाते हैं। न तो कभी विरोध थमता है, और न ही मेट्रो। कांच के भीतर से केवल बाहर और बाहर ही देखा जा सकता है।

एक छोटे शहर से ताल्लुक रखने वाले अशोक पर्पल लाइन पर मेट्रो ट्रेन ऑपरेटर हैं। बंगलूरू के एमजी रोड पर अपनी पहली यात्रा को याद करते हुए वह कहते हैं, 'मुझे लगा कि कोई चिड़िया शहर के ऊपर से सभी शानदार जगहों को देखते हुए उड़ रही है...यह काफी रोमांचक था।' ट्रेन से शहर सुचारू ढंग से बढ़ता दिखता है, क्योंकि आप ट्रैफिक की यातायात के शोर, धूल और गंदगी के ऊपर से गुजरते हैं। यात्रियों का दृश्य-पथ धुएं से धुंधले क्षितिज तक फैला हुआ है, जो ऊंची-ऊंची इमारतों से घिरा हुआ है और हर गुजरते दिन के साथ बढ़ता ही जाता है। इसके बावजूद कि घर से मेट्रो के बीच की कनेक्टिविटी खराब है, महिलाओं का कहना है कि वे सफर के लिए मेट्रो को पसंद करती हैं, क्योंकि यह 'स्वच्छ', 'सुरक्षित' है और इसका उपयोग 'सभ्य लोगों' द्वारा किया जाता है। सभ्य लोगों से उनका तात्पर्य अच्छी तरह से तैयार, व्यवस्थित मध्यम वर्गीय व्यक्ति है। अपनी पूरी दक्षता और आभा के साथ इस हाई-टेक ड्रीम मशीन मेट्रो ने हजारों लोगों के शहर में आवागमन को आसान बना दिया है, लेकिन यह कई अंतर्विरोधों से भरा है। ये अंतर्विरोध कभी-कभी कर्मचारियों की अचानक हड़ताल और तकनीकी गड़बड़ियों के रूप में सामने आते हैं। इसकी निर्बाध गतिविधि उन अनसुलझी लड़ाइयों पर निर्भर है, जो पर्यावरणविदों, भूमि गंवाने वालों और शहर के अन्य लोगों द्वारा वर्ष 2007 से सड़क पर और अदालतों में लड़ी जा रही हैं। हालांकि इनमें से अधिकांश लड़ाइयों ने ट्रेन को ज्यादा प्रभावित नहीं किया है, क्योंकि यह निर्बाध चलती है, पूरे शहर में नए मार्ग बनाती है और हर बढ़ते शहर के भीतरी इलाकों में अपनी जगह बनाती है।

उषा राव

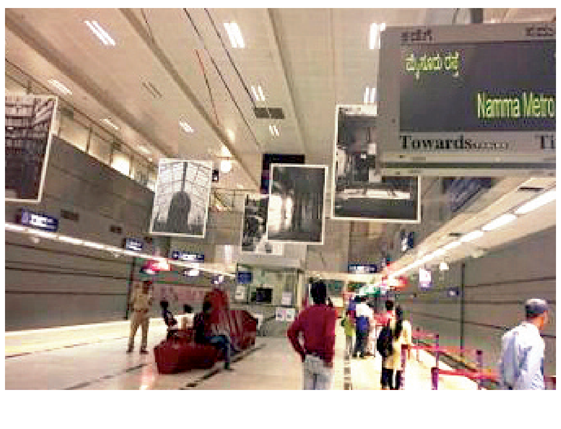

इन पंक्तियों की लेखिका को दिए अपने एकमात्र इंटरव्यू में बंगलूरू मेट्रो कॉरपोरेशन के निदेशक ने यह स्पष्ट कर दिया कि मुझे अधिकारियों, कर्मचारियों या यात्रियों से इंटरव्यू नहीं लेने दिया जाएगा। इसलिए मैंने केवल गुपचुप बातचीत और गुप्त बैठकों के जरिये मेट्रो कर्मचारियों के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त की है, और किनारे रहकर मेट्रो की खुदाई के दौरान आवासीय जगहों और उसके आसपास को नष्ट होते देखा है।

तीन साल पहले, निर्माणाधीन पिंक लाइन ने अपना मार्ग बदल दिया और 2.5 किमी से भी कम क्षेत्र में फैले तीन खेल मैदानों को निगल लिया। तीन घनी एवं निम्न आय वर्ग के लोगों की बस्तियों के लिए यही एकमात्र खुला सार्वजनिक स्थान था, जिसे स्टेशन बनाने के लिए ले लिया गया और इस तरह बच्चों एवं वयस्कों को इकट्ठा होने, खेलने, इबादत करने और जश्न मनाने के लिए जगह से वंचित कर दिया गया। आज बांदा ग्राउंड सबसे बड़ा गड्ढा है। रात के अंधेरे में यहां के निवासियों के घरों की दीवारें भूमिगत सुरंग के झटके से हिलने लगती हैं। लोगों के घरों में पीले निशान हैं, जो बताते हैं कि उन्हें ध्वस्त कर दिया जाएगा। किसी भी निवासी को पुनर्वास की किसी योजना की जानकारी नहीं है। जब स्टेशन बनेंगे, तो पता ही नहीं चलेगा कि वहां क्या था और क्या खो गया है। मेट्रो कॉरपोरेशन पर लगातार अपारदर्शी होने और सहभागी प्रक्रियाओं को दरकिनार करने का आरोप लगाया गया है। न केवल हरे रंग के टीन के बैरिकेड्स के भीतर निर्माण कार्य चलता रहता है, बल्कि अचानक स्थान परिवर्तन के फैसलों के बारे में भी चुप्पी छाई रहती है और उन लोगों को भी कुछ नहीं बताया जाता, जो उससे सीधे प्रभावित होते हैं।

पिछले साल यात्रियों को प्लेटफॉर्म के किनारे से दूर रखने वाली एक महिला गार्ड स्वयं बेहोश होकर पटरियों पर गिर पड़ी। सौभाग्य से वह बच गई और उसे घर भेज दिया गया। लेकिन उसके फिर से काम पर लौटने की सूचना नहीं मिली। मेट्रो कर्मचारी यूनियन के नेता स्वामी ने बताया कि हो सकता है कि वह थकावट के कारण गिर गई हो। इस तरह की कहानियां मेट्रो संचालन करने वाले लोगों के साथ उसके सामाजिक संबंधों के बारे में बताती हैं।

मेट्रो अत्याधुनिक डिजिटल तकनीक पर चलती है। इसका कार्यस्थल उच्च तकनीक वाला है, लेकिन सामाजिक संबंध पुराने ढर्रे को दर्शाता है, जो 'प्रबंधन और 'काम' करने वालों के बीच बड़े पैमाने पर विभाजन पैदा करते हैं। सात साल पहले बनी यूनियन को अब तक मान्यता नहीं मिली है। प्रबंधन के अनुसार, कोई श्रमिक नहीं है, क्योंकि सभी कर्मचारी टेक्नोलॉजी के साथ काम करते हैं। इसलिए, कर्मचारी औद्योगिक विवाद अधिनियम (1947) द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा का दावा करने में असमर्थ हैं, जिससे उचित वेतन और काम की परिस्थितियों के लिए सौदेबाजी के अधिकार सहित कई अधिकार प्राप्त होते हैं। इसके अलावा, श्रमिकों को एक गुप्त समझौते पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य होता है, जो उन्हें रोजगार की विसंगतियों और शिकायतों सहित कार्यस्थल की गतिविधियों को सामने लाने से रोकता है।

मेट्रो लाइनें शहर में स्थानों, लोगों और रोजमर्रा की जिंदगी पर उनके प्रभाव के आधार पर पदानुक्रम पैदा करती हैं। मेट्रो को तालियों की गड़गड़ाहट मिल रही है, जिसकी वे हकदार भी हैं, लेकिन इसकी आड़ में उन कहानियों को छिपा दिया जाता है, जो इसके स्याह पक्ष को दर्शाती हैं। निकट भविष्य में लगभग 50 और शहर मेट्रो को अपना सकते हैं, मगर ऐसे हर शहर को विरासत में जटिल सांगठनिक प्रवृत्तियां और कार्यशैली मिलती है, जो शायद ही पारदर्शी या समावेशी हैं। इससे रहने लायक शहर के लिए निवासियों की जद्दोजहद बढ़ जाती है। इन प्रतिस्पर्धाओं के परिणाम मेट्रो को या तो समावेशी शहरी भविष्य के लिए एक भागीदार में बदल सकते हैं, या फिर लोगों और जगहों पर किसी कल्पित शहर के अपने दृष्टिकोण का ठप्पा लगा सकते हैं।

-लेखिका शोधकर्ता और नृवंशविज्ञानी हैं।

edit@amarujala.com

राजेंद्र अवस्थी

(1930-2009)

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में

मूलतः आदमी भी एक जानवर है। संस्कार पाकर उसने शहर बना लिए और अपने को और आदमियों से अलग कर लिया।

जंगल की खुली हवा में नई सभ्यता की खोज

आदमी भीड़ से डरता है, लेकिन शोर से दूर होकर उसका भय उतना ही बढ़ जाता है। इसलिए वह भीड़ और एकांत के बीच एक झूले की तरह झूलता रहता है। झूलने के माध्यम कुछ भी हो सकते हैं। माध्यमों की तलाश में ही आदमी ने एकांत में इमारतें खड़ी कर दीं और गर्मियों में पत्थरों को भी आवाजें दीं। अक्सर घने जंगल में अकेले चलते हुए ऐसा लगता है, जैसे कोई पांव पीछा कर रहा हो। लौटकर देखने पर कुछ नहीं मिलता। तो क्या कोई भूत है वह, जो पीछा कर रहा है? शायद...नहीं भी! आदमी स्वयं किस भूत से कम है! वही अपने आप पीछा करता है।...सुनसान जंगल देखकर जानवरों और बंदरों की तरह चीख पड़ता है। मूलतः आदमी भी एक जानवर है। संस्कार पाकर उसने शहर बना लिए और अपने को और आदमियों से अलग कर लिया। घने जंगलों की आंखमिचौनी देखनी है अथवा अकेलेपन का एहसास करना है या फिर एक अछूती नई दुनिया की झांकी पानी है, तो बस्तर चले जाइए। बस्तर यानी जगदलपुर। जगदलपुर यानी बस्तर। गोवा जाकर गोवा नाम की जगह ढूंढ़ना व्यर्थ है, उसी तरह बस्तर जाकर बस्तर नाम की जगह नहीं ढूंढ़ी जा सकती। कहने के लिए एक छोटा-सा गांव है, उसी का नाम बस्तर है। लेकिन वास्तव में पूरा जगदलपुर जिला ही बस्तर कहलाता है। जगदलपुर के कॉलेज में आदिवासी लड़के और लड़कियां भी पढ़ने लगे हैं। साइकिलें चलाना उन्हें आता है। लेकिन इसके साथ-साथ जगदलपुर के बाजार में लाल चीटों और मेंढकों का अचार भी बिकता है। कौड़ियों की मालाएं। कौड़ियों का अन्य श्रृंगार और घुंघचियों की रंग-बिरंगी गुरियां। पूरी देह में गुदना गुदाए आदिवासी लड़कियां घुटने तक मिनी साड़ी और खुले स्तन नितांत शांत मुद्रा में बाजार करती और घूमती नजर आएंगी। लड़के भी घुटने तक उठी धोती पहने और ऊपर से एक बंडी। कई खुले-नंगे बदन भी। उनके भीतर झांककर देखना हर किसी के लिए आसान नहीं है।

दिल्ली के कनॉट प्लेस या बंबई में फैशनपरस्त लड़कियों को देखकर मन करता है, इन सबको जगदलपुर की सैर करा दी जाए। ये यह दावा करना तो छोड़ देंगी कि फैशन में वे 'ओरिजिनल' हैं।

मुझे याद है। एक बार एक लड़की को मैंने पीने के लिए बीड़ी दी थी, तो उसने बीड़ी लेकर अपने कान में खोंस ली थी। मैंने कोटवार से पूछा था, यह बीड़ी क्यों नहीं पीती? साहब, दूसरी बीड़ी दीजिए, तो वह पिएगी। यह बीड़ी रात को अपने चेलिक को देगी। मैंने उसे दूसरी बीड़ी दी, तो वह उसे पी गई। रात और चेलिक! जगदलपुर के पास ही मुरिया गोंडों की बस्ती है। प्रत्येक मुरिया गांव के बाहर एक झोपड़ी होती है। एक खुला हॉल। हॉल में आते ही लड़के और लड़कियां अलग-अलग चटाइयां बिछा देते हैं। फिर बाहर बैठकर घंटों आग तापते हैं, गीत गाते हैं या फिर नाचते हैं। रात भीगती है, तो एक-एक लड़का एक-एक लड़की के साथ उस खुले हॉल में जोड़ा बनाकर सो जाता है। यहां का पुरुष सदस्य चेलिक कहलाता है और लड़कियां मोटियारी। दिल्ली के कनॉट प्लेस अथवा बंबई में फैशनपरस्त लड़कियों को देखकर मन करता है, इन सबको एक बार जगदलपुर की सैर करा दी जाए। कम से कम ये सब यह दावा करना तो छोड़ देंगी कि फैशन में वे 'ओरिजिनल' हैं। जगदलपुर की लड़कियां इनसे बहुत आगे हैं। लेकिन यह उनका सहज रूप है। जिस लड़की के सिर पर जितनी ज्यादा कंघियां हैं, उसके उतने ही प्रेमी हैं। जिस लड़के के गले में गुरियों की जितनी ही अधिक मालाएं हैं, उसकी उतनी ही प्रेमिकाएं हैं। जंगल की खुली हवा की तरह अछूते और सहज इन लोगों के बीच जाकर ऐसा लगता है, जैसे हमने एक नई सभ्यता की खोज कर ली है।

मंजिलें और भी हैं

निकहत जरीन

बीते माह तुर्की में विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर मैंने इतिहास रच दिया। इसके साथ ही विश्व चैंपियन बनने वाली मैं अपने देश की पांचवीं महिला बन गई हूं। इसके लिए प्रधानमंत्री से लेकर देश भर के लोगों ने मेरी प्रशंसा की है।

देश के लिए खेलना और जीतना है मेरा लक्ष्य

मेरा जन्म तेलंगाना के निजामाबाद में एक मध्यमवर्गीय मुस्लिम परिवार में हुआ। परिवार में खेल का कोई माहौल नहीं था, लेकिन मुझे जीवन में कुछ भी करने की आजादी थी और मेरे माता-पिता चाहते थे कि मैं कुछ बड़ा करूं। शुरू में मुझे नहीं पता था कि बड़े होकर क्या करना है। एक दिन मैंने अपने चाचा शम्सुद्दीन को बॉक्सिंग रिंग में मुक्केबाजी करते हुए देखा। उनकी वह तस्वीर मेरे जेहन में इस कदर बैठ गई कि मैंने भी उन्हीं की तरह मुक्केबाज बनने की ठान ली। शुरू में सबको थोड़ा अजीब लगा, रिश्तेदारों ने विरोध किया, मां ने भी ना-नुकुर की। लेकिन पिताजी ने न सिर्फ मेरा साथ दिया, बल्कि 12 वर्ष की उम्र में उन्होंने मुझे मुक्केबाजी का शुरुआती प्रशिक्षण भी दिया। फिर आगे के प्रशिक्षण के लिए मैं विशाखापट्टनम चली गई, जहां देश के नामचीन बॉक्सिंग कोच आई. वी. राव ने मुझे प्रशिक्षण दिया। उनके नेतृत्व में प्रशिक्षण लेना कोई आसान काम नहीं था, लेकिन मैंने पूरी मेहनत और दृढ़ इच्छाशक्ति से उनसे प्रशिक्षण लिया।

सफलता की शुरुआत

एक वर्ष के प्रशिक्षण के बाद 2010 में इरोड नेशनल्स में मैंने 'गोल्डन बेस्ट बॉक्सर' का खिताब अपने नाम कर इस सफर की शुरुआत की। उसके बाद मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और अगले ही वर्ष 2011 में तुर्की में यूथ वर्ल्ड बॉक्सिंग चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर एक अलग पहचान बनाई। फिर एक के बाद एक खिताब अपने नाम कर मैंने पदकों की लंबी कतार लगा दी।

बनी विश्व चैंपियन

इसी कड़ी में सफलता की एक सीढ़ी और चढ़ते हुए बीते 19 मई को विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप के फाइनल में स्वर्ण पदक जीतकर मैंने एक नया इतिहास रच दिया। इसके साथ ही विश्व चैंपियनशिप का खिताब जीतने वाली मैं अपने देश की पांचवीं महिला मुक्केबाज बन गई हूं। इससे पहले इस चैंपियनशिप में मैरीकॉम, सरिता देवी, जेनी आरएल और लेखा सी. स्वर्ण पदक जीत चुकी हैं।

समाज के लिए मिसाल

आज मैंने जो मुकाम हासिल किया है उसके पीछे एक लंबा संघर्ष है। लोग आज मेरी मेहनत और उपलब्धियों से ज्यादा धर्म को लेकर सवाल करते हैं, लेकिन मेरे लिए धर्म मायने नहीं रखता। मैं किसी समुदाय के लिए नहीं खेलती, मेरा लक्ष्य भारत के लिए खेलना और जीतना है। चाहे कोई भी परिवेश हो, धर्म या समुदाय हो, अगर लड़कियां एक बार ठान लें, तो कुछ भी कर सकती हैं।

(विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित)

आंकड़े

कैंसर के मामलों में वृद्धि

वर्ष 2014 से 2018 के बीच देश में सबसे ज्यादा कैंसर के मामले हरियाणा में दर्ज किए गए। पुरुषों में जहां होंठ और मुंह के कैंसर ज्यादा होते हैं, वहीं महिलाओं में स्तन कैंसर के मामले ज्यादा हैं।

हरियाणा	27%	केरल	26%
छत्तीसगढ़	23%	जम्मू-कश्मीर	23%
बिहार	23%	झारखंड	22%

स्रोत- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय

राजा बोले, 'गुरुदेव, गुरुकुल में यदि आप मेरी पिटाई कर मुझे कुसंगति से बचने की प्रेरणा न देते, तो मैं आज राजा की जगह कोई अपराधी होता।'

गुरु की कृपा

अंतर्यात्रा
शिव कुमार गोयल

उज्जैन के राजकुमार सातवाहन एक गुरुकुल में पढ़ते थे। उनके विद्यागुरु शिवदास ने एक दिन शरारत करने के कारण उनकी पिटाई कर दी। गुरुजी ने चेतावनी दी कि भविष्य में दुष्ट किस्म के छात्रों के कुसंग से बचो। उसके बाद राजकुमार ने कुसंगति छोड़ दी। आगे चलकर राजकुमार सातवाहन उज्जैन के राजा बने।

गुरु शिवदास वृद्ध होकर वन में भगवान की आराधना करने लगे थे। वह भिक्षा मांगकर भोजन कर लेते तथा अपना शेष समय भगवान की आराधना में बिताते।

एक दिन शिवदास अपने शिष्य के राजपाट की जानकारी लेने उज्जैन नगरी पहुंचे। उन्होंने राजमहल के द्वार पर भिक्षा की गुहार की। राजा सातवाहन उनकी आवाज सुनते ही महल के द्वार पर आए और अपने विद्यागुरु को देखते ही उनके चरणों में नतमस्तक हो गए। वह बोले, 'गुरुदेव, गुरुकुल में आपके द्वारा की गई पिटाई ने ही मुझे राज पद तक पहुंचाया है। यदि आप मेरी पिटाई कर मुझे कुसंगति से बचने की प्रेरणा न देते, तो मैं आज राजा की जगह कोई अपराधी होता।'

गुरु शिवदास अपने शिष्य की विनम्रता देखकर गद्गद हो उठे।

(अमर उजाला आर्काइव से)

शिलालेख

इस तरह उपेक्षा मेरी,
क्यों करते हो मतवाले!
आशा के कितने अंकुर,
मैंने हैं उर में पाले॥
विश्वास-वारि से उनको,
मैंने हैं सींच बढ़ाए।
निर्मल निकुंज में मन के,
रहती हूं सदा छिपाए॥

-सुभद्राकुमारी चौहान

रोजगार का नया मार्ग अग्निपथ

सेना के तीनों अंगों में भर्ती के लिए घोषित अग्निपथ योजना निश्चय ही युवाओं को आकर्षित करेगी, लेकिन चार साल बाद उनका भविष्य क्या होगा, यह स्पष्ट नहीं है।

शंभूनाथ शुक्ल

रोजगार

कोरोना से उबरने के बाद रोजगार के मोर्चे पर एक बड़ी राहत भरी खबर आई है, कि केंद्र सरकार देश के बेरोजगार युवाओं को डेढ़ साल के भीतर 10 लाख नौकरियां देगी। सरकार के तमाम विभागों में हजारों पद खाली हैं, जो अब तेजी से भरे जाएंगे। किंतु जिस नौकरी ने सबका ध्यान आकर्षित किया है, वह है सेना के तीनों अंगों (जल, थल और वायुसेना) में 46,000 जवानों की अल्पकालिक भर्ती।

सेना की इस भर्ती योजना को 'अग्निपथ' नाम दिया गया है और इसमें संविदा के तहत अल्पकालिक सेवा अवधि के लिए जवानों की भर्ती होगी। देश के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने घोषणा की कि अग्निपथ योजना के तहत एक साल में साढ़े 17 से 21 वर्ष की उम्र के बीच के युवकों को सैन्य सेवा का अवसर मिलेगा। इन जवानों को अग्निवीर कहा जाएगा। सेना में इनकी सेवा अवधि महज चार साल की होगी। इस दौरान उन्हें पहले वर्ष 30,000 रुपये मासिक वेतन मिलेगा, जो बढ़ते-बढ़ते चौथे वर्ष में चालीस हजार रुपये हो जाएंगे।

Join the Indian Army as an Agniveer for 4 Years and Live a Life of Adventure
मौका जिंदगी ... दादिली से जीने का

इस सेवा से मुक्त होने पर उन्हें 11.71 लाख रुपये का एकमुश्त सेवा निधि पैकेज मिलेगा, जो टैक्स फ्री होगा। इस पैकेज के लिए जवानों के वेतन से हर महीने 30 प्रतिशत की कटौती होगी तथा इतनी ही राशि सरकार भी उनके खाते में डालेगी। लेकिन ये अग्निवीर ग्रेच्युटी और पेंशन के अधिकारी नहीं होंगे। इन अग्निवीरों में महिला सैनिक भी होंगी।

यह योजना निश्चय ही निम्न मध्य वित्तीय परिवार के बच्चों को अपनी तरफ खींचेगी। मगर चार वर्ष बाद उनका भविष्य क्या होगा, इसकी कोई स्पष्ट नीति सरकार ने नहीं घोषित की है। सैन्य विशेषज्ञ भी इसे लेकर चिंतित हैं और विरोधी दलों के लोग इसे मोदी सरकार की चुनावी रणनीति का शिगूफा बता रहे हैं। रिटायर्ड लेफ्टिनेंट जनरल पीआर शंकर ने इसे 'किंडर गार्डेन' आर्मी बताया है, तो पूर्व सैन्य अधिकारी विनोद भाटिया के अनुसार, इससे समाज के सैन्यीकरण का खतरा है। इन दोनों की आशंकाएं निर्मूल नहीं हैं।

संविदा के ये सैन्यकर्मी जब चार साल बाद सेवा मुक्त होंगे, तब करेंगे क्या! युवावस्था में नौकरी न होने की हताशा में शस्त्र संचालन में निपुण ये युवा अपराध की तरफ भी जा सकते हैं। इसलिए पूर्व सैन्य अधिकारियों का मानना है कि इन 'अग्निवीरों' के भविष्य को मजबूत करने की पूरी जिम्मेदारी सरकार को लेनी चाहिए।

हालांकि रक्षामंत्री ने यह भी कहा है कि इनमें से 25 फीसदी को नियमित सेना में लिया जाएगा। लेकिन सिर्फ उन्हें जो हर तरह से फिट होंगे। शेष जवानों को शस्त्र संचालन के अलावा कुछ व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा, ताकि इस शॉर्ट टर्म सेवा के बाद उन्हें नौकरी पाने या स्वरोजगार शुरू करने में कोई परेशानी न हो। लेकिन हर चार साल बाद जिन 40 हजार युवाओं को सेना से मुक्त कर दिया जाएगा, क्या वे सभी नौकरी पा जाएंगे? इसीलिए कुछ रक्षा विशेषज्ञों ने ये सवाल भी उठाए हैं कि इस अल्प अवधि की संविदा के आधार पर नौकरी पाए इन जवानों को नियमित सेना से अलग कैसे माना जाएगा? और क्या यह कोई अनिवार्य सैन्य शिक्षा योजना है? यदि ऐसा है, तो पहले से ही मौजूद एनसीसी को क्यों नहीं फिर से सक्रिय किया गया। एनसीसी (नेशनल कैडेट कोर) के तहत सेकेंडरी और यूनिवर्सिटी में पढ़ रहे विद्यार्थियों को सैन्य प्रशिक्षण दिया जाता है।

गौरतलब है कि 1914 में पहले विश्वयुद्ध के समय युवाओं को सैन्य शिक्षा देने के लिए यूरोप के कई देशों में अनिवार्य सैनिक सेवा या प्रशिक्षण दिए जाने की शुरुआत हुई थी। आज भी सैन्य शिक्षा विश्व के 15 देशों में अनिवार्य है। अपुष्ट सूचनाएं हैं कि चीन में भी यह ट्रेनिंग अनिवार्य है।

किसी प्रभुसत्ता संपन्न राष्ट्र में सेना की भूमिका अहम होती है-बाहरी हमलों के समय और घरेलू संकट में भी। ऐसे में अनिवार्य सैन्य शिक्षा की अवहेलना नहीं की जा सकती। परंतु इसके लिए सरकार को अपनी नीति जनता के समक्ष स्पष्ट रखनी चाहिए।